

संपादकीय

दुनिया के करीब उनसठ देश किसी न किसी रूप में संघर्षरत हैं। उनमें केवल अपनी ताकत दिखाने की कोशिशें अधिक देखी जा रही हैं। ऐसी स्थितियों को रोकने के मकसद से गठित संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद अब जैसे अप्रासंगिक हो गई है। इजराइल और ईरान के बीच युद्धविराम पर सहमति की खबर निश्चित रूप से अच्छी बात है। युद्ध को किसी भी रूप में उचित नहीं ठहराया जा सकता। इस युद्ध विराम की सूचना पहले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दी। उनका दावा है कि उन्हीं के समझाने पर दोनों देश जंग की राह छोड़ने पर तैयार हुए

21 जून को इटावा जिले में बकेवर थाना क्षेत्र के दादरपुर गांव मे कथा कहने गये कथावाचक मुकुट मणि यादव, सहायक आचार्य संत सिंह यादव व ढोलक वादक श्यामवीर सिंह कठेरिया की बर्बरता पूर्वक पिटाई करने के बाद जबरन शिखा काटी गयी व सिर मुंडवाया गया । शिखा काटने के बाद मुख्य यजमान की पत्नी के पैरों पर नाक रगड़कर माफी मंगवाई गयी । ढोलक वादक श्यामवीर सिंह कठेरिया दोनों आंखों से सूर है उसको भी मारा पीटा गया, ढोलक छीन ली गयी और गंजा किया गया उस बेचारे का क्या कसूर था । कहा गया कि पंडितों के गांव में कथा कहने की हिम्मत कैसे की। निर्लज्जता की हद तो तब हो गयी जब एक महिला का मूत्र कथाकार मण्डली में शामिल लोगों के ऊपर छिड़का गया ।

इटावा कथावाचक विवाद पर राजनीति ठीक नहीं

(बृजनन्दन राजू)
वैसे भी अनुसूचित समाज ने कथा व भागवत का आयोजन करना लगभग बंद ही कर दिया है। ओबीसी समाज से जुड़ी मौर्य व पाल समेत कई जातियां भी भी इस प्रकार के आयोजन बहुत कम हो गए हैं। यह सब जातियां बुद्ध की अनुगामी बन रही है। उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में कथाकार की जाति पूछकर किए गए अमानवीय कृत्य से पूरा देश शर्मसार है। जहां पर ‘जाति न पूछिए साधु की पूछ लीजिए ज्ञान’ की बात कही जाती हो उस देश में इस प्रकार की घटना हिन्दू समाज के माथे पर कलंक है। विचार के आधार पर यदि आचरण नहीं है तो हमारी तत्व निष्ठा व्यर्थ है। अगर सभी संतानें ईश्वर की हैं तो ऊंच नीचता की भावना नहीं होनी चाहिए।

21 जून को इटावा जिले में बकेवर थाना क्षेत्र के दादरपुर गांव मे कथा कहने गये कथावाचक मुकुट मणि यादव, सहायक आचार्य संत सिंह यादव व ढोलक वादक श्यामवीर सिंह कठेरिया की बर्बरता पूर्वक पिटाई करने के बाद जबरन शिखा काटी गयी व सिर मुंडवाया गया। शिखा काटने के बाद मुख्य यजमान की पत्नी के पैरों पर नाक रगड़कर माफी मंगवाई गयी। ढोलक वादक श्यामवीर सिंह कठेरिया दोनों आंखों से सूर है उसको भी मारा पीटा गया, ढोलक छीन ली गयी और गंजा किया गया उस बेचारे का क्या कसूर था । कहा गया कि पंडितों के गांव में कथा कहने की हिम्मत कैसे की। निर्लज्जता की हद तो तब हो गयी जब एक महिला का मूत्र कथाकार मण्डली में शामिल लोगों के ऊपर छिड़का गया। इस घटना का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर शेयर किया गया। सोचकर देखों उस समय उन लोगों के दिल पर क्या बीती होगी जो कई सालों से गांव–गांव जाकर लोगों को कथा सुनाकर धर्म का प्रचार कर रहा हो। उसके साथ इस प्रकार की अभद्रता कि मानवता भी सरमा जाय। इस प्रकार का अमानवीय कृत्य तो मुगल आक्रान्ता ही करते थे। शिखा, जनेऊ व तिलक से उन्हें ही चिढ़ होती थी। कथावाचक की शिखा औरंगजेब की ही औलादें काट सकती हैं। हिन्दू धर्म में शिखा रखने का बहुत ही महत्व है। हमारे पूर्वजों ने शिखा तिलक व जनेऊ की रक्षा के लिए अनेकों बलिदान दिए हैं।

इस घटना से यादव व अनुसूचित समाज आक्रोशित है। समाज की बलाहने वाले व्यथित हैं वहीं राजनीतिज्ञ लोगों की भावनाएं उभाकर आग में घी डालने का काम कर रहे हैं। क्योंकि उनके बैठे–बैठे समाज को बांटने का मुद्दा मिल गया है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पीड़ितों के घाव पर महम लगाने का काम किया। घटना के दूसरे दिन उन्हें सपा कार्यालय बुलाकर कथाकार की पूरी मण्डली को सम्मानित किया और 21–21 हजार रुपये भेंट

हैं। पिछले बारह दिनों से दोनों देश एक–दूसरे पर विनाशकारी हमले कर रहे थे। हालांकि अमेरिका शुरू से कहता रहा कि इस युद्ध को रोका जाना चाहिए। मगर उसका रुख एकतरफा ही था। वह स्पष्ट रूप से इजराइल के साथ खड़ा नजर आ रहा था। इजराइल को उसका समर्थन पिछले रविवार को तब पूरी तरह स्पष्ट हो गया, जब उसके बंकरभेदी विमानों ने ईरान के तीन परमाणु ठिकानों पर भीषण बम बरसा दिए। उस समय माना जाने लगा कि यह जंग लंबी चलेगी। युद्ध विराम की सूचना ने दुनिया को सुखद आश्चर्य से भर दिया। मगर इसके साथ ही

युद्ध विराम के उल्लंघन से एक बार फिर चिंता पैदा हुई है। हालांकि ऐसे कयास लगाए जा रहे थे कि इजराइल अब थक चुका है और ईरान के हमलों को नाकाम करने में विफल हो रहा है, इसलिए वह कदम पीछे खींचना चाहता है। फिर, अमेरिका को भी लग रहा था कि अगर वह इराक की तरह ईरान में भी फंस गया, तो मुश्किलें बढ़ सकती हैं। युद्ध शुरू करना तो आसान होता है, पर उसे समाप्त करना अपने हाथ में नहीं होता। फिर, किसी भी युद्ध के लंबे समय तक चलते रहने का असर न केवल संबंधित देशों की अर्थव्यवस्था पर, बल्कि दुनिया के

बहुत सारे देशों पर पड़ता है। ऐसे में, इस युद्ध विराम की घोषणा हर तरह से सराहनीय कही जा सकती है। इस युद्ध में कौन सही था, कौन गलत, इसका विश्लेषण तो बहुत हो चुका, इतिहास में भी होता रहेगा, पर अभी इस बात पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है कि यह विराम स्थायी रूप कैसे ले। विर्डबना यह है कि ट्रंप के युद्ध विराम की खबर देने के बाद भी ईरान और इजराइल ने एक–दूसरे के ठिकानों पर बम फेंके और अभी वे एक–दूसरे को संघर्ष विराम के उल्लंघन का दोषी ठहराने में लगे हुए हैं। इससे यही लगता है कि दोनों के भीतर



बचाने का तरीका है। इस घटना को यादव बनाम पंडित का रूप दिया जा रहा है जो सरासर गलत है। एक समस्या के पटाक्षेप के लिए दूसरी मनगढ़त कहानी गढ़ना कहां तक उचित है। इससे दलित व ब्राहमणों के बीच खाई गहरी हो रही है। हिन्दू समाज में फूट डालने व जातीय संघर्ष को बढ़ावा देने वाला है। इस प्रकार के कृत्य करने वाले पण्डित हो ही नहीं सकते। सोशल मीडिया पर इस कृत्य की निन्दा हो रही है। वहीं कुछ लोग लाटियां लहराते हुए अपना आक्रोश प्रकट कर रहे हैं। प्रदर्शन भी हो रहे हैं। यह एक व्यक्ति या एक जाति का अपमान नहीं बल्कि सनातन का अपमान है। सनातन की सांस्कृतिक एकता पर आघात किया गया है।

वैसे भी अनुसूचित समाज ने कथा व भागवत का आयोजन करना लगभग बंद ही कर दिया है। ओबीसी समाज से जुड़ी मौर्य व पाल समेत कई जातियां में भी इस प्रकार के आयोजन बहुत कम हो गए हैं। यह सब जातियां बुद्ध की अनुगामी बन रही है। ऐसे ही होता रहा तो समाज का एक बड़ा वर्ग हमसे अलग हो जायेगा। हमारे पूर्वजों ने कठोर साधना व तपस्या कर

भगवान पर अधिक अधिकार है और यादव, मौर्यों, पाल व चमार पासी का अधिकार कम है। हिन्दुत्व का अभिमान रखते हैं। राम व कृष्ण के प्रति उनके मन में भी अगाध श्रद्धा है। पिछड़े व अनुसूचित समाज में बड़ी संख्या में संत महापुरुष पैदा हुए हैं जिन्होंने सामाजिक एकता के लिए अपना संपूर्ण जीवन लगाया। बाबा साहब भीमराव आम्बेडकर ने अगस्त 1927 में अंबा देवी मंदिर अमरावती में प्रवेश सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि हिन्दुत्व जितनी सूर्ययों की संपर्ति है, उतनी ही अस्पृश्यों की भी। हिन्दुत्व की प्राण प्रतिष्ठा वशिष्ठ जैसे ब्राहमणों ने, कृष्ण जैसे क्षत्रियों ने हर्ष जैसे वैश्यों ने तथा तुकाराम जैसे शूद्रों ने की है। काशी विद्वत परिषद ने कहा है ‘जो शास्त्रों को जानते है, भक्ति भाव, सत्यनिष्ठ, ज्ञानवान और जानकार है उन्हें कथा कहने का अधिकार है। इसमें जाति भेद नहीं है, क्योंकि जो ज्ञानी है वही, पंडित या ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी है। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारीलाल शर्मा ने कहा कि कथावाचक कौन होगा, इसके लिए शास्त्रों में जाति के

समाज आज भी अपमानित हो रहा है। योग्यता प्राप्त युवाओं को भी अवसर नहीं मिल रहे हैं। उनके साथ भेदभाव हो रहा है। हमारे पूर्वजों से कुछ गलतियां हुई थी जिनका परिणाम आज हम भुगत रहे हैं अगर इस समय इस प्रकार की गलती करेंगे तो आने वाली हमारी पीढ़ियां भुगतेंगी। इस प्रकार का कृत्य घोर निन्दनीय है। कुछ लोग इस प्रकार के कृत्य करने वालों की आलोचना करने के बजाय उनका बचाव कर रहे हैं। इस प्रकार की घटना में राजनीति करना सामाजिक एकता के लिए बाधक है। इस घटना की आड़ में यादव ब्राह्मण के बीच विवाद खड़ाकर समाज में जातीय विद्वेस पैदा करने का प्रयास हो रहा है। हिन्दू समाज में व्याप्त ऊंच नीच की भावना रक्षा के लिए नितान्त घातक है। हिन्दू एकता कमजोर हुई तो राष्ट्र कमजोर हो जायेगा। इसलिए समता व समरसता युक्त आचरण ही सभी समस्याओं का समाधान है।

हिन्दुभूमि की हम संतानें बंधु भाव नित अपनाने।

सभी भेद राख दूर स्वयं को केवल हिन्दू कहलायें।।(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

कठिनतम परिस्थितियों में भी मरीजों को जीवनदान देते हैं चिकित्सक

समाज के प्रति चिकित्सकों के समर्पण एवं प्रतिबद्धता के लिए कृतज्ञता और आभार व्यक्त करने तथा मेडिकल छात्रों को प्रेरित करने के लिए ही प्रतिवर्ष देश में एक जुलाई को ‘राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस’ मनाया जाता है। गंभीर से गंभीर बीमारियों से जूझते मरीजों की जान बचाने का हरसंभव प्रयास करने वाले चिकित्सक वाकई सम्मान के सबसे बड़े हकदार भी हैं। चिकित्सक दिवस मनाने का मूल उद्देश्य चिकित्सकों की बहुमूल्य सेवा, भूमिका और महत्व के संबंध में आमजन को जागरूक करना, चिकित्सकों का सम्मान करना और साथ ही चिकित्सकों को भी उनके पेशे के प्रति जागरूक करना है।

(योगेश कुमार गोयल)
चिकित्सक दिवस की स्थापना भारत में वर्ष 1991 में हुई थी। पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री और जाने-माने चिकित्सक डा. बिधान चंद्र रॉय के सम्मान में चिकित्सकों की उपलब्धियों तथा चिकित्सा क्षेत्र में नए आयाम हासिल करने वाले डॉक्टरों के सम्मान के लिए इसका आयोजन होता है। समाज के प्रति चिकित्सकों के समर्पण एवं प्रतिबद्धता के लिए कृतज्ञता और आभार व्यक्त करने तथा मेडिकल छात्रों को प्रेरित करने के लिए ही प्रतिवर्ष देश में एक जुलाई को ‘राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस’ मनाया जाता है। गंभीर से गंभीर बीमारियों से जूझते मरीजों की जान बचाने का हरसंभव प्रयास करने वाले चिकित्सक वाकई सम्मान के सबसे बड़े हकदार भी हैं। चिकित्सक दिवस मनाने का मूल उद्देश्य चिकित्सकों की बहुमूल्य सेवा, भूमिका और महत्व के संबंध में आमजन को जागरूक करना, चिकित्सकों का सम्मान करना और साथ ही चिकित्सकों को भी उनके पेशे के प्रति जागरूक करना है। कोरोना महामारी के भयावह दौर में दुनियाभर में चिकित्सक अपनी जान की परवाह किए बिना करोड़ों लोगों के जीवन की रक्षा करते नजर आए थे। उस विकट दौर में देश में ड्यूटी के दौरान सैकड़ों चिकित्सकों की मौत हुई थी लेकिन फिर भी चिकित्सक जो-जान से लोगों की जान बचाने में जुटे नजर आए थे। कोरोना की पहली और दूसरी लहर के दौरान तो बहुत से चिकित्सकों और चिकित्सा स्टाफ को अपनी छुट्टियां रद्द कर प्रतिदिन लंबे-लंबे समय तक कार्य करना पड़ा था और ऐसे बहुत से चिकित्सक मीं महीनों-महीनों तक अपने परिवार और छोटे बच्चों से भी दूर रहे थे। हालांकि कुछ चिकित्सक ऐसे भी देखे जाते हैं, जो अपने इस सम्मानित पेशे के प्रति ईमानदार नहीं होते लेकिन ऐसे चिकित्सकों की भी कमी नहीं, जिनमें अपने पेशे के प्रति समर्पण की कोई कमी नहीं होती। बिना चिकित्सा व्यवस्था और बिना योग्य चिकित्सकों के इंसान की जिंदगी कैसी होती, इसकी कल्पना मात्र से ही

रोम-रोम सिहर जाता है। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में चिकित्सकों का महत्व सदा से रहा है और हमेशा रहेगा।

चिकित्सक दिवस की स्थापना भारत में वर्ष 1991 में हुई थी। पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री और जाने-माने चिकित्सक डा. बिधान चंद्र रॉय के सम्मान में चिकित्सकों की उपलब्धियों तथा चिकित्सा क्षेत्र में नए आयाम हासिल करने



वाले डॉक्टरों के सम्मान के लिए इसका आयोजन होता है। वे एक जाने-माने चिकित्सक, प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और वर्ष 1948 से 1962 में जीवन के अंतिम क्षणों तक पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री रहे। उन्होंने पश्चिम बंगाल में दुर्गापुर, बिधाननगर, अशोकनगर, कल्याणी तथा हबरा नामक पांच

शहरों की स्थापना की थी। संभवतः इसीलिए उन्हें पश्चिम बंगाल का महान वास्तुकार भी कहा जाता है। कलकत्ता विश्वविद्यालय से मेडिकल की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने वर्ष 1911 में एमआरसीपी और एफआरसीएस की डिग्री लंदन से ली। उन्होंने एक साथ फिजिशियन और सर्जन की रॉयल कॉलेज की सदस्यता हासिल कर हर किसी को अपनी प्रतिभा से हतप्रभ कर दिया था। वर्ष 1911 में भारत में ही एक चिकित्सक के रूप में उन्होंने अपने चिकित्सा कैरियर की शुरुआत की। वे कलकत्ता मेडिकल कॉलेज में शिक्षक नियुक्त हुए। वर्ष 1922 में वे कलकत्ता मेडिकल जनरल के सम्पादक और बोर्ड के सदस्य बने। 1926 में उन्होंने अपना पहला राजनीतिक भाषण दिया और 1928 में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सदस्य भी चुने गए। डा. बिधान चंद्र रॉय ने 1928 में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के गठन और भारत की मेडिकल काउंसिल (एमसीआई) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कई बड़े-बड़े पदों पर रहने के बाद भी वे प्रतिदिन गरीब मरीजों का मुफ्त इलाज किया करते थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् उन्होंने अपना समस्त जीवन चिकित्सा सेवा को समर्पित कर दिया। बेहतरीन स्वास्थ्य सुविधाओं को आम जनता की पहुंच के भीतर लाने के लिए वे जीवन पर्यंत प्रयासरत रहे। 4 फरवरी 1961 को उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार ‘भारत

टिस’ अभी बनी हुई है। इसे भी समाप्त होना चाहिए। अगर अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप सचमुच शांति के लिए प्रतिबद्ध हैं, तो ऐसा वातावरण बनाने की जिम्मेदारी उन्हीं पर अधिक है। पिछले कुछ वर्षों से देखा जा रहा है कि युद्ध में निराम-कायदों और सारी नैतिकता को ताक पर रख दिया जा रहा है। इजराइल इतने समय से फिलिस्तीन में जिस तरह बम बरसा रहा है, उसमें निरपराध स्त्रियों, बच्चों तक की चिंता नहीं की गई, अस्पतालों में बीमार और घायलों की परवाह किए बिना बम गिराए गए, वह युद्ध अपराध की ही श्रेणी में आता है। फिर ईरान के विरुद्ध परमाणु हथियार बनाने के सबूत के बगैर उसने हमला कर दिया। परमाणु विकिरण की परवाह किए बिना अमेरिका ने भी ईरान के परमाणु ठिकानों पर बम गिरा दिए। इसी तरह दुनिया के करीब उनसठ देश किसी न किसी रूप में संघर्षरत हैं।

जिसके बाद इस दिन ने काफी लोकप्रियता हासिल की और आज के समय में सोशल मीडिया पर ही दुनिया भर के लोग और संगठन निर्भर हैं। इस दिन को सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल करने और उसको बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है।

हर साल मनाया जाता है वर्ल्ड सोशल मीडिया डे, जानिए इतिहास और महत्व

(अनन्या मिश्रा)
हर साल 30 जून को वर्ल्ड सोशल मीडिया डे मनाया जाता है। सोशल मीडिया दिखाता है कि काल्पनिक और वास्तविकता के बीच समान रेखा होती है। लोग रोजाना कई घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं। खासकर युवा इसके आदी हो चुके हैं। वर्तमान समय में सोशल मीडिया हमारी लाइफ का एक जरूरी हिस्सा बन चुका है। लोग रोजाना कई घंटे सोशल मीडिया पर बिताते हैं। खासकर युवा इसके आदी हो चुके हैं। यह संचार, कनेक्टिविटी और सूचना शेयर करने का सबसे आसान तरीका है। वहीं हर साल 30 जून को वर्ल्ड सोशल मीडिया डे मनाया जाता है। सोशल मीडिया दिखाता है कि काल्पनिक और वास्तविकता के बीच समान रेखा होती है। तो आइए जानते हैं इस दिन के इतिहास और महत्व के बारे में।
इतिहास: साल 2010 में डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म मैसेबल द्वारा विश्व सोशल मीडिया दिवस की शुरुआत की गई थी। मैसेबल का उद्देश्य मीडिया, संचार और समाज को सभी रूपों में बदलने में सोशल मीडिया को एक वैश्विक उत्सव के रूप में बनाना था।

जिसके बाद इस दिन ने काफी लोकप्रियता हासिल की और आज के समय में सोशल मीडिया पर ही दुनिया भर के लोग और संगठन निर्भर हैं। इस दिन को सोशल मीडिया का सही इस्तेमाल करने और उसको बढ़ावा देने के लिए मनाया जाता है।

महत्व: यह दिन हमारे जीवन में सोशल मीडिया के महत्व को पहचानने के लिए मनाया जाता है। वर्ल्ड सोशल मीडिया डे कनेक्शन को बढ़ावा देने, सकारात्मक बदलाव को प्रभावित करने और जागरुकता फैलाने के फायदों के बारे में बताता है। यह दुनियाभर के लोगों, व्यवसायों और समुदायों को एक साथ लाता है।

यह दिन मनाने का कारण: सोशल मीडिया को पसंद करने का मुख्य कारण यह है कि यह हमें नए लोगों से जोड़ता है। लोग अपनी खुलकर राय शेयर करते हैं और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। अक्सर सोशल मीडिया के माध्यम से उभरते हुए कलाकारों ने स्टारडम पाया है। सोशल मीडिया लोगों के लिए संभावनाओं की नई दुनिया खोलता है। तो वहीं कई लोग लगातार अपडेट रहने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं।

कागज़ कलम क्यों हैं ज़रूरी

(अक्षय शुक्ला)
आखिरी बार आपने कलम से कब लिखा था शायद याद भी न हो। कंप्यूटर और मोबाइल के इस युग में लिखने की आदत लगभग छूटती जा रही है। कलम का इस्तेमाल दस्तखत करने भर का रह गया है। कुछ दिनों पहले एक मीटिंग में हाथ से नोट्स लिखने की ज़रूरत पड़ी तो ठीक से लिखते ही नहीं बना। हैड्राइटिंग बहुत खराब हो चुकी है। खुद का लिखा पढ़ना भी मुश्किल हो रहा था।हाल ही में एक नेपाली लड़की प्रकृति मल्ला का बहुत ही सुंदर हैड्राइटिंग में लिखा स्कूल असाइनमेंट वायरल हुआ था। सोशल मीडिया पर कई यूजर्स ने इसे दुनिया की सबसे सुंदर हस्तलिपि बताया तो कुछ ने कहा कि एक-एक अक्षर टाइप किया गया जैसा लग रहा, मानो कागज़ पर मोतियों की माला पिरो दी गई हो। यह आठ साल पुराना असाइनमेंट था, जब प्रकृति आठवीं कक्षा में पढ़ती थीं और इसमें उन्होंने हैड्राइटिंग के महत्व पर लिखा था।इसे देख स्कूल के दिन याद आ गए, जब हमारी लिखावट भी ऐसी ही सुंदर होती थी। कौन कितना सुंदर लिखता है, इसका मुकाबला होता था। टीचर स्कूल के एक्स्ट्रा मार्क्स देती थीं।लेकिन अब तो बहुत से स्कूलों में स्मार्टबोर्ड लग गए हैं और बच्चे टेब पर पढ़ाई कर रहे हैं, जिससे उनके लिखने की आदत बचपन से ही छूट रही है। उनकी उंगलियां की-बोर्ड, टच पैड और टच स्क्रीन पर ज्यादा तेज़ चलती हैं।ताज़ा शोध के मुताबिक की-बोर्ड पर टाइप करने के बजाय हाथ से कॉपी पर लिखने वाले बच्चे बेहतर ढंग से सीख और समझ पाते हैं। स्पेन की बास्क यूनिवर्सिटी की स्टडी में बच्चों के नए अक्षर और शब्द सीखने की क्षमता पर होने वाले असर का आकलन किया गया।अध्ययन में पांच से छह साल के बच्चों को शामिल किया गया, जो इस उम्र में पढ़ना लिखना सीखना शुरू करते हैं। इसमें पाया गया कि लिखते वक्त बच्चा अक्षरों के आकार को बेहतर ढंग से समझ पाता है, जिससे हाथ और दिमाग में समन्वय मजबूत होता है। वह अक्षरों की बनावट और क्रम को ठीक से याद रख पाता है। जबकि की-बोर्ड पर वह बस उस अक्षर को दबा देता है, उसे लिखने का तरीका नहीं सीख पाता। यही वजह है कि अब कई एक्सपर्ट्स कागज़ और कलम का प्रयोग अधिक करने की वकालत करने लगे हैं।टचस्क्रीन और वाईस टाइपिंग के इस नए ज़माने में तो लोग की-बोर्ड टाइपिंग भी भूलते जा रहे हैं। खासकर नई पीढ़ी, जिसका पहला वास्ता ही टचस्क्रीन से पड़ रहा है, उसे टाइपिंग आती ही नहीं। जब बोलकर ही काम हो रहा है तो वे टाइप करने से बच रहे हैं।आज के डिजिटल युग में जब सुलेख की कला लगभग खत्म होने के कगार पर है, तब ऐसे कई स्टार्टअप आगे आ रहे हैं, जो हाथ से लिखने को प्रोत्साहित करने के मिशन में लगे हुए हैं। ऐसा ही एक स्टार्टअप हाल में रिएलिटी शो में आया था, जहां इसके फाउंडर्स ने बताया कि कैसे वे स्कूलों में इवेंट और वर्कशॉप के जरिए हस्तलेखन को बढ़ावा देने का काम कर रहे हैं।जब शोध भी यह कह रहे कि बच्चों के सीखने समझने की क्षमता प्रभावित हो रही है तो उनके हाथों से कागज़ और कलम कतई नहीं छीनना चाहिए।ऊपर व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं।

रब’ से सम्मानित किया गया। 1967 में दिल्ली में उनके सम्मान में डा. बी.सी. रॉय स्मारक पुस्तकालय की स्थापना हुई और 1976 में उनकी स्मृति में केन्द्र सरकार द्वारा डा. बी.सी. रॉय राष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना की गई। संयोगवश डा. रॉय का जन्म और मृत्यु एक जुलाई को ही हुई थी। उनका जन्म 1 जुलाई 1882 को पटना में हुआ था और मृत्यु 1 जुलाई 1962 को हृदयाघात से कोलकाता में हुई थी।

चिकित्सा एक ऐसा क्षेत्र है, जिसे केवल आजीविका का साधन मानना इसके व्यापक सामाजिक और मानवीय महत्व को छोटा करना होगा। यह महज एक पेशा नहीं बल्कि समाज की सेवा, पीड़ित मानवता की सहायता और जीवन रक्षा का माध्यम है। एक सच्चा चिकित्सक न केवल बीमार व्यक्ति का इलाज करता है बल्कि उसके परिवार की आशाओं को भी संजीवनी देता है। इसीलिए समाज में डॉक्टरों को अत्यंत सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है और बदले में उनसे भी सेवा, समर्पण और ईमानदारी की अपेक्षा की जाती है। हालांकि, निजी अस्पतालों में इलाज के नाम पर लापरवाही, अनावश्यक जांचों और अत्यधिक शुल्क वसूली के आरोप भी सामने आते रहे हैं, जिससे कुछ चिकित्सकों की छवि धूमिल होती है परंतु यह भी सच है कि सभी डॉक्टरों को इस दृष्टि से नहीं देखा जा सकता।

आज भी अधिकांश चिकित्सक अपनी जिम्मेदारियों को निष्ठा और करुणा के साथ निभा रहे हैं। वे कठिनात्म परिस्थितियों में भी मरीजों को न केवल जीवनदान देते हैं बल्कि उम्मीद और विश्वास की लौ भी जलाए रखते हैं। कई बार डॉक्टर मौत से जूझ रहे मरीजों को पुनः जीवन देने में सफल होते हैं। इसलिए एक समर्पित और संवेदनशील डॉक्टर न केवल चिकित्सा जगत का रत होता है बल्कि वह समाज का भी एक सच्चा प्रहरी होता है। ऐसे डॉक्टर सदैव सम्मान और आभार के सच्चे अधिकारी होते हैं क्योंकि वे निःस्वार्थ सेवा के जरिए जीवन को नया आयाम देते हैं। (लेखक 35 वर्षों से साहित्य एवं पत्रकारिता में निरंतर सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार हैं)

संक्षिप्त समाचार

निर्माण कार्य की गुणवत्ता की खुली पोल, पहली ही बारिश में छत से टपकने लगा पानी



मूक पत्रिका/दंतेवाड़ा – जिले में विकास की गति कितनी तेज है यह आप कटे कल्याण के ब्लॉक मुख्यालय में बने जिम में जाकर देख सकते हैं ,निर्माण कार्य की गुणवत्ता इतनी खराब है कि पहले ही बारिश में दो माह पूर्व उद्घाटन हुए जिम में पहली ही बरसात में छत से पानी टपकने लगा है । आम जनता जिम में अपनी शरीर को तंदरुस्त रखने के लिए जाते है पर यह जिले का पहला दिन है जहां कभी भी आम जनता के सिर ऊपर छत गिर सकता है । जिम के अंदर पानी का रिसाव बहुत तेज हो रहा है जिसे इकट्ठा करने के लिए लोगों के द्वारा बाल्टी लगाया गया है। फर्लस सीलिंग कितनी मजबूत है इसका अंदाजा आम जनता लगा सकती है । ऐसे अनेको उदाहरण आपको कटेकल्याण ब्लॉक मुख्यालय के ग्राम पंचायतो में देखने को मिलेंगे जहां कालम तो खड़ी है दीवाल का पता नहीं और कहीं पल के लिए गड्ढा खोदा हुआ है पर पल नहीं बना ।

दादी की जमीन बेचने और मारपीट का आरोप, मामला दर्ज

बिलासपुर। कांग्रेस पार्षद पर वृद्ध दादी की जमीन बेचने और मारपीट का आरोप, मामला दर्ज बिलासपुर के सकरी थाना क्षेत्र से एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। वार्ड क्रमांक 1 के कांग्रेस पार्षद अमित भारते पर अपनी 70 वर्षीय वृद्ध दादी राजकुमारी भारते की पुश्तैनी जमीन बेचने और विरोध करने पर उनके साथ मारपीट करने का गंभीर आरोप लगा है। राजकुमारी भारते की शिकायत के आधार पर पुलिस ने पार्षद अमित भारते के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सकरी पुलिस के अनुसार, राजकुमारी भारते, जो कुदुर्दंड, सकरी के दलदलिहापारा स्थित अपने पैतृक घर में रहती हैं, ने बताया कि जब वह अपने नाती नंदकुमार भारते के साथ अपनी संपत्ति देखने गईं, तो उन्होंने अपने पोते अमित से उस जमीन को बेचने का कारण पूछा जो उनके (राजकुमारी भारते के) नाम पर थी। पृष्ठताछ से नाराज होकर अमित ने कथित तौर पर अपनी दादी का गला दबाकर उनके साथ मारपीट की। इस दौरान उसने गाली-गलौज करते हुए उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी। घटना के समय मौजूद उनके भाई नंदकुमार को भी अमित ने धमकाया और घर से बाहर निकाल दिया। राजकुमारी भारते ने यह भी बताया कि पार्षद अमित भारते ने अपनी बहन सीमा जोशी के हिस्से की संपत्ति के दस्तावेज और पर्वी भी अपने पास रख ली है, जिसे लौटाने से उन्होंने इनकार कर दिया है।

सीआरपीएफ सब इंस्पेक्टर से 22 लाख की ठगी: टेलीकॉम विभाग का अधिकारी बनकर लगाया गया चूना

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले से एक बड़ी और दिल को छू लेने वाली खबर सामने आई है। दीपका गांव की रहने वाली निर्मला तिवारी को आखिरकार 30 साल की लंबी कानूनी लड़ाई के बाद न्याय मिला है। मामला एसईसीएल (स्वष्ट्र) द्वारा जमीन अधिग्रहण के बदले दी जाने वाली नौकरी से जुड़ा है, जिसमें धोखाधड़ी कर एक फर्जी व्यक्ति को नौकरी दे दी गई थी। निर्मला तिवारी की 0.21 एकड़ जमीन वर्ष 1981 में एसईसीएल की कोयला खदान परियोजना के लिए अधिग्रहित की गई थी। इसके बदले में मुआवजा तो 1985 में दे दिया गया, लेकिन नौकरी एक ऐसे व्यक्ति नंद किशोर जायसवाल को दे दी गई, जिसने खुद को महिला का बेटा बताकर नौकरी हासिल कर ली। जब निर्मला को इस धोखाधड़ी का पता चला, तो उन्होंने न्याय की लड़ाई शुरू की। सालों की कोशिशों के बाद वर्ष 2016 में एसईसीएल ने नंद किशोर को नौकरी से बर्खास्त कर दिया, लेकिन इसके बाद भी निर्मला के बेटे उमेश तिवारी को नौकरी देने से इंकार कर दिया गया।

न्यायालय तहसीलदार, बेमेतरा के न्यायालय मे मामला क्रमांक: 202506230600057

मामले की श्रेणी:- राजस्व
सन्:- 2024-2025
विषय:- ब-121
निनवा प.ह.न. 00040 [(.ह.)]
पक्षकारों का विवरण - आवेदक पक्षकार सुखदास मानिकपुरी, अनावेदक पक्षकार -

ईश्रतहार
एतद सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है आवेदक सुखदास मानिकपुरी पिता स्व. छोटकूदास मानिकपुरी निवासी ग्राम निनवा तहसील व जिला बेमेतरा ने इस न्यायालय के समक्ष अपने माता तिलमती बाई पति छोटकूदास मानिकपुरी की मृत्यु पंजीयन हेतु आवेदन पेश किया है जिनकी मृत्यु दिनांक 17/06/2013 को स्थान ग्राम निनवा में होना और भूलेवश मृत्यु का पंजीयन नहीं करा पाना बताया गया है।
उक्त आवेदन पत्र के सम्बंध में यदि किसी व्यक्ति को दावा/आपत्ति हो तो वे नियत पेशी तारीख 10/07/2025 तक इस न्यायालय में स्वयं या अपने अधिवक्ता के माध्यम से उपस्थित होकर अपनी दावा/आपत्ति दर्ज करा सकते हैं उक्त तिथि के पश्चात प्राप्त आवेदन पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।
यह ईश्रतहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 19/06/2025 को जारी किया जाता है ।

तहसीलदार
बेमेतरा

मुहर

आए दिन होते रहते हैं हादसे, नगर पालिका बेपरवाह, बरसात के मौसम में सैलानियों की बढेगी भीड़

बेपरवाह पालिका प्रशासन, नगर में सड़कों पर आवारा मवेशियों का जमावाड़ा

मूक पत्रिका/दंतेवाड़ा – दिनों दिन नगर में सड़कों पर मवेशियों का जमावाड़ा एक गंभीर समस्या बनता जा रहा है। ये देखने में भले ही एक छोटी सी समस्या लगती हो पर जब इनकी वजह से घटनाएं होती है जानमाल का नुकसान होता है तब लोगों को समझ में आता है, कि ये कोई छोटी नहीं बल्कि बहुत बड़ी और गंभीर समस्या है। जब तक कोई हादसा न हो जाए तब तक प्रशासन, पालिका, जनप्रतिनिधि, समाजसेवी या फिर आम व्यक्ति किसी का ध्यान इस समस्या की ओर नहीं जाता। जनहित तथा गौ माता के हित में यह खबर प्रकाशित करना बेहद आवश्यक था। यूं तो समय समय पर नगर पालिका प्रशासन का ध्यानाकर्षण इस ओर खबरों के माध्यम से कराया जाता रहा है मगर बेपरवाह पालिका प्रशासन पर इसका कोई असर अब तक नहीं हुआ। एक बार पुनः इस ताजा चित्र के माध्यम से नगर प्रशासन को जगाने की कोशिश होगी। अगर समय रहते जिमेदार



जाग जाएंगे तो निश्चित तौर पर न केवल आने वाले हादसों से बचा जा सकता है वरन पशुओं एवं आम इंसान की जान भी बचाई जा सकती है।

गौरतलब है कि नगर के सड़कों पर, चौक चौराहों पर गाय, भैंसों का जमावाड़ा कोई आज की समस्या नहीं बल्कि कई दशकों से यह समस्या विद्यमान है शासन प्रशासन इस समस्या का स्थाई हल आज तक नहीं खोज पाई हैं। तमाम जतन व उपाय के बावजूद इस गंभीर समस्या से

आज भी आम इंसान परेशान है। सड़कों पर मवेशियों के बैठने से कई हादसे नगर में पहले भी घटित हो चुके हैं। हादसे में कई पशुओं की मौत हुई है तो कई इंसानों की जान भी चली गई है कई गंभीर रूप से चोटिल भी हुए हैं। नगर के बैंक चौक से लेकर पुलिस लाइन कारली तक सड़कों पर, चौक चौराहों पुलिसों के उपर जगह जगह पशुओं का जमावाड़ा सुबह शाम देखा जा सकता है। तेज रफ्तार वाहनों की चपेट में अक्सर ये



पशुएं आ जाते हैं। छोटे बड़े हादसे इनकी वजह से होती ही रहती है। नगर पालिका प्रशासन की यह जिम्मेदारी बनती है कि नगर के सड़कों से आवारा पशुओं को हटाने की कारगर व्यवस्था सुनिश्चित करे मगर ऐसा होता नहीं दिख रहा। दो दिनों बाद चैत्र नवरात्र की शुरूआत होने जा रही है। बड़ी संख्या में दूर दराज से श्रद्धालु माता दंतेश्वरी के दर्शन पूजन के लिए दंतेवाड़ा पहुंचेंगे। सप्ताह भर के भीतर एक कदावर केंद्रीय मंत्री का

आगमन भी नगर में होने वाला है जिसकी भव्य तैयारी भी जगर शोर से चल रही है। ऐसे में नगर के सड़कों पर इस तरह से बेजुबान पशुओं का जमावाड़ा लगना और इस समस्या के प्रति नगर पालिका का आंखें मूंदे रहना कहां तक सही है? अब समस्या है तो सवाल तो उठेंगे ही ना। बेहतर होगा कि कोई बड़ा हादसा हो इससे पहले ही नगर पालिका कुंभकरणी लिए दंतेवाड़ा पहुंचेंगे। सप्ताह भर के भीतर एक कदावर केंद्रीय मंत्री का समाधान निकाले।

कलेक्टर ने ली आदिवासी विकास विभाग की समीक्षा बैठक

आश्रम-छात्रावासों में मूलभूत सुविधाओं का रखें ध्यान: कलेक्टर डॉ सिंह

मूक पत्रिका/रायपुर – कलेक्टर डॉ गौरव सिंह ने बीते शुक्रवार को रेडक्रास सभाकक्ष में आदिवासी विकास विभाग की बैठक ली। उन्होंने कहा कि जिले मे संचालित आश्रम-छात्रावास में साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। सभी विद्यार्थियों का आयुष्मान कार्ड और आधार कार्ड बनवाएं। छात्रावास के कमरों, बिस्तरों एवं शौचालयों में साफरखें। वहां रहने वाले विद्यार्थियों का समय-समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराएं। किसी प्रकार की बीमारी होने पर उपर्युक्त दवाई उपलब्ध कराएं। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग से



संपर्क कर स्वच्छ पेयजल प्रदान करें। छात्रावास के कमरों की मरम्मत कराएं। कलेक्टर ने कहा कि छात्रावास के दीवारों पर महत्वपूर्ण कार्यालय के फोन नंबर अंकित कराएं। सभी अधीक्षक अधीक्षिका अपने क्राटर में रहना सुनिश्चित करें। छात्रावास में जो विद्यार्थी उर्तीण हो गए है वे ही निवास करें कोई भी अनाधिकृत रूप से ना रहें। यह सुनिश्चित करें

कि शिष्यवृत्ति का भुगतान निर्धारित समय में हो। छात्र-छात्राओं से अच्छा व्यवहार किया जाए। उन्होंने पालकों के श्रम कार्ड तथा आयुष्मान कार्ड की जानकारी ली। बैठक में नगर निगम आयुक्त विश्वदीप एवं जिला पंचायत सीईओ कुमार बिश्वरंजन, सहायक आयुक्त आदिवासी विकास विभाग संजय चंदेल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

पानी केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि जीवन का आधार:कलेक्टर संजय अग्रवाल

■ भू-जल संरक्षण एवं संवर्धन पर तीन दिवसीय कार्यशाला
■ जल संरक्षण के उपायों पर किया गया विचार-विमर्श

बिलासपुर। भू-जल संवर्धन एवं संरक्षण के लिए जिले में व्यापक अभियान चलाया जाएगा। इसके लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम जिला पंचायत के सभागार में आयोजित किया गया। आज कार्यशाला के समापन अवसर में कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल शामिल हुए। कार्यशाला में सीईओ जिला पंचायत श्री संदीप अग्रवाल समेत संभाग के सभी जिलों के



सीईओ जिला पंचायत ने भी भाग लिया। कार्यशाला में जल का बचाव कर भविष्य के लिए जल संरक्षण के उपायों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। केंद्रीय भूमि जल बोर्ड द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में भू-जल संरक्षण के विषय में रिजलन डायरेक्टर सी जी. डब्ल्यू. जी एनसीसीआर रायपुर से आये डॉ. प्रवीर के. नायक द्वारा

विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यशाला में भू-जल संवर्धन के लिए जनभागीदारी पर बल दिया गया। कैसे जन जागरूकता और प्रति व्यक्ति जिम्मेदारी के साथ इस समस्या का समाधान किया जाएगा, इस पर राहन चर्चा की गई।कलेक्टर श्री संजय अग्रवाल ने कहा कि पानी केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं बल्कि जीवन का आधार है। जिस

तेजी से भू-जल स्तर गिर रहा है। वह न केवल पर्यावरण के लिए बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक खतरा बन चुका है। हमने आने वाले पीढ़ियों का पानी भी उपयोग कर लिया है। उन्होंने कहा कि जल संकट से बचने के लिए यदि अभी से ठोस कदम नहीं उठाए गए तो स्थिति और गंभीर हो सकती है। जिस तेजी से हम भूमिगत जल का दोहन कर रहे हैं। उसी हिसाब से नीचे पानी नहीं भेज रहे हैं। पुराने समय में शहर भी नदियों के किनारे बसते थे। हमारे यहां बहुत अच्छी बारिश होती है लेकिन हम इसका संरक्षण नहीं कर पाते हैं। कलेक्टर ने कहा कि हमें जनभागीदारी से भू-जल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए प्रयास करना होगा। राज्य में राजनांदगांव, धमतरी जिले में इस दिशा में सराहनीय कार्य किया गया है।

शहर में डायरिया का संक्रमण बढ़ रहा तेजी से

रतनपुर। बारिश के बाद रतनपुर क्षेत्र में डायरिया संक्रमण तेजी से फैल रहा है। स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में रोजाना कई मरीज डायरिया की शिकायत लेकर पहुंच रहे हैं। गंभीर हालत वाले मरीजों को अस्पताल में भर्ती कर इलाज किया जा रहा है, जिससे बेड की संख्या कम पड़ रही है। खासतौर पर गिरजावन और नवागांव इलाकों से सबसे ज्यादा मरीज आ रहे हैं। अस्पताल प्रशासन ने बताया कि मरीजों की संख्या में अचानक वृद्धि से स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव बढ़ गया है। वर्तमान में अस्पताल में केवल एक डॉक्टर और सीमित स्टाफउपलब्ध है, जो बढ़ती मरीज संख्या को संभालने में असमर्थ दिख रहा है। अस्पताल के 16 बेड पूरी तरह से भर चुके हैं और स्टाफलगातार मरीजों की सेवा में लगी हुआ है। डॉक्टरों का कहना है कि इस तरह के मौसम में साफ-सफाई का खास ध्यान रखना बहुत जरूरी है, क्योंकि थोड़ी सी लापरवाही से बड़ी बीमारियां फैल सकती हैं। उन्होंने लोगों से आग्रह किया है कि केवल उबला हुआ या फिल्टर्ड पानी ही पीएं, क्योंकि दूषित पानी के कारण डायरिया के मामले बढ़ें हैं।

नाम परिवर्तन

मैं / शपथकर्ता दिनेश साहू उम्र 28 वर्ष पिता जेदूराम साहू जाति तेली ग्राम ढनढनी पोस्ट मुरता तहसील पड़ जिला बेमेतरा (छ.ग.) का हूं जो कि निम्नलिखित शपथपूर्वक कथन करता हूं :-
यह कि, शपथकर्ता का नाम पता उपरोक्तानुसार है।
मेरी भतीजी जानकी साहू JANKI SAHU पिता श्याम साहू SHYAMU SAHU निवासी ग्राम ढनढनी पो. मुरता जिला बेमेतरा (छत्तीसगढ़) का स्थायी निवासी है जिसका आधार कार्ड क्र. 2261 7058 8131 है।
यह कि, अब मैंने अपनी भतीजी का नाम परिवर्तन कर जमूना JAMUNA राखा है और मेरी भतीजी के जन्म प्रमाण पत्र में जानकी साहू पिता श्यामू साहू एवं स्कूली रिकार्ड, अंकसूची में जमूना पिता श्यामू साहू दर्ज है। अब मेरी भतीजी को इसी परिवर्तित नाम से जानी-पहचानी जाये।
यह कि, मैं अपनी भतीजी का नाम समस्त आवश्यक दस्तावेजों में परिवर्तित नाम जमूना JAMUNA पिता श्यामू साहू SHYAMU SAHU दर्ज कराना चाहता हूं।
यह कि जानकी JANKI SAHU पिता श्यामू साहू SHYAMU SAHU एवं जमूना JAMUNA पिता श्यामू साहू SHYAMU SAHU दोनों एक ही व्यक्ति अर्थात मेरी भतीजी का ही नाम है।
अतः शपथ पत्र अपनी भतीजी का सही, वास्तविक एवं परिवर्तित नाम जमूना JAMUNA पिता श्यामू साहू SHYAMU SAHU उनसे संबंधित समस्त आवश्यक दस्तावेजों में दर्ज करने तथा छत्तीसगढ़ राजपत्र में प्रकाशन हेतु प्रस्तुत करता हूं।
यह कि, उक्त नाम के संबंध में कोई भी वाद-विवाद या उजर आपत्ति होती है तो संपूर्ण जवाबदारी शपथकर्ता का होगा।
यह कि, उपरोक्त कथनों के समर्थन में यह शपथ पत्र आवश्यकतानुसार प्रस्तुत है।
यह कि, उक्त आवेदन पत्र उप संचालक शासकीय क्षेत्रीय मुद्रणालय राजनांदगांव द्वारा प्रस्तुत है।

शपथकर्ता
दिनेश साहू

न्यायालय अनुविभागीय अधिकारी (रा.)

बेमेतरा, जिला-बेमेतरा (छ.ग.)
ईश्रतहार
रा.प्र.कं. 202507230300004/233/ अ-2/ वर्ष 2024-25
एतद सर्वसाधारण ग्राम/नगर जेवरी तहसील व जिला बेमेतरा को सूचित किया जाता है कि आवेदक/आवेदिका शारदा देवी निषाद पति शिवचंद निषाद निवासी वार्ड नं. 16 सिंघौरी तहसील बेमेतरा जिला बेमेतरा (छ.ग.) द्वारा ग्राम/नगर जेवरी प.ह.नं. 38 तहसील बेमेतरा जिला बेमेतरा में स्थित उनके नाम की भूमि स्वामी हक की भूमि ख.नं. 1116/7, 1116/8 रकबा 0.04, 0.02 भूमि को व्यवसायिक प्रयोजनार्थ बाबत् आवेदन पत्र, शपथ पत्र, बी-1, खसरा, स्ट्याम्प, की छायाप्रति प्रस्तुत किया गया है।
अतः उक्त संबंध में किसी को कोई दावा आपत्ति हो तो पेशी दिनांक 16.07. 2025 को न्यायालय में उपस्थित होकर पेश कर सकते हैं। नियत तिथि के बाद प्राप्त आपात्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।
आज दिनांक 02.07.2025 को मेरे स्वयं के हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर से जारी किया गया ।
अनुविभागीय अधिकारी (रा.)
बेमेतरा, जिला बेमेतरा

मुहर

नाम परिवर्तन

मैं योगेश पिता श्री परघनिया उम्र 40 वर्ष निवासी ग्राम बिलई पोस्ट पेण्ड्रीतराई तहसील व जिला बेमेतरा (छ.ग.) का निवासी हूं जो कि शपथपूर्वक यह कथन प्रस्तुत करता हूं
1. यह कि, मैं उपरोक्त पते पर निवास करता हूं।
2. यह कि, मेरे पुत्र एवन कुमार साहू के जन्म प्रमाण पत्र एवं अन्य समस्त शैक्षणिक अभिलेख, दाखिला खारजि, शासकीय/अर्द्धशासकीय में नाम एवन कुमार साहू नाम दर्ज है। जो उसका वास्तविक नाम है। जबकि मेरे पुत्र के आधार कार्ड में नाम ऐनु साहू दर्ज हो गया है। मैं अब मेरे पुत्र का नाम एवन कुमार साहू रखना चाहता हूं, जिसके आधार कार्ड में उसका नाम ऐनु साहू दर्ज के स्थान पर संशोधन कर एवन कुमार साहू रखना चाहता हूं, एवं उक्त नाम परिवर्तन की सूचना राजपत्र में प्रकाशित करना चाहता हूँ।
3. यह कि मेरे द्वारा सारवान तथ्य छिपाने का प्रयास नही किया गया है।
तदाशय के संबंध में शपथ पत्र आपकी ओर प्रस्तुत है।

शपथकर्ता
योगेश

मुहर

पुलिस एंड फायर गेम्स 2025:

गुरुप्रसाद ने मनवाया भारतीय पुलिस का लोहा, गोल्ड के साथ जीता ब्रॉन्ज



कनाटक, एजेसी। कर्नाटक के तुमकुरु जिला पुलिस विभाग के एथलीट गुरुप्रसाद ने अमेरिका में भारतीय पुलिस का लोहा मनवाया है। गुरुप्रसाद ने अलबामा में आयोजित वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स 2025 के 21वें संस्करण में स्वर्ण और कांस्य पदक अपने नाम किए। भारतीय पुलिस टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए, गुरुप्रसाद ने अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता में 10 किलोमीटर क्रॉस कंट्री दौड़ में स्वर्ण और 5 किलोमीटर दौड़ में कांस्य पदक जीता। गुरुप्रसाद वर्तमान में तुमकुरु शहर के तिलक पार्क पुलिस स्टेशन में कास्टबल के पद पर कार्यरत हैं। वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स 2025 का आयोजन 27 जून से 6 जुलाई के बीच अमेरिका में हो रहा है, जो एक ओलंपिक शैली की प्रतियोगिता है। इसमें विश्व के अलग-अलग देशों के हजारों एथलीट हिस्सा लेते हैं, जिन्हें लॉ-एफोर्समेंट, फायरफाइटर और करेक्शन, प्रोबेशन, बॉर्डर प्रोटेक्शन, इमिग्रेशन

बदले की आग में जल रहे रोमन रेंस

इस इवेंट में करेंगे वापसी, इन रेसलर्स की कुटाई तय



सकते हैं। यह भी बताया है कि उनका नाम आंतरिक उनके लिए कुछ बड़ा प्लान कर रहा है। हालांकि, रो

और कस्टम के अधिकारी होते हैं।

खेलों का आयोजन हर दो साल में एक बार किया जाता है। आमतौर पर आधिकारिक खेल कार्यक्रम में 60 से अधिक खेल शामिल होते हैं। इन खेलों का संचालन कैलिफोर्निया पुलिस एथलेटिक फेडरेशन (सीपीएफ), मेजबान शहर और डब्ल्यूपीएफजी निदेशक मंडल करते हैं। पहली बार वर्ल्ड पुलिस जेम्स फायर गेम्स साल 1985 में सैन जोसे (कैलिफोर्निया) में आयोजित किया गया था। अब तक इसका आयोजन अमेरिका सहित ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, चीन, उत्तरी आयरलैंड, स्पेन और स्वीडन में किया जा चुका है। वर्ल्ड पुलिस एंड फायर गेम्स (डब्ल्यूपीएफजी) का उद्देश्य वैश्विक स्तर पर कैलिफोर्निया पुलिस गेम्स की ही तरह खेलों की समान विविधता, उच्च स्तरीय स्टेडियम, कुशल अधिकारी और बेहतरीन एथलेटिक प्रदर्शन प्रदान करना है।

डब्ल्यूपीएफजी का दायरा लगातार बढ़ रहा है। इसमें हिस्सा लेने वाले देशों की संख्या के साथ-साथ उपस्थिति भी लगातार बढ़ रही है। हालांकि, इसमें औसतन लगभग 9,000 एथलीट हिस्सा लेते हैं, लेकिन 2011 में न्यूयॉर्क में आयोजित डब्ल्यूपीएफजी ने अब तक की सबसे बड़ी भागीदारी का रिकॉर्ड बनाया था, जिसमें करीब 70 देशों से आए 16,000 से अधिक एथलीट्स ने 67 खेलों में प्रतिस्पर्धा की थी।

नई दिल्ली, एंजेंसी। डब्ल्यूडब्ल्यूई के दर्शक रोमन रंस लेकर काफी उत्साहित हैं। अप्रैल में रसमेनिया 41 के सवे से वे टीवीबिजन पर नहीं दिखते हैं। उस समय सैथ रॉलिंस पर बॉक्स ब्रेकर के उन पर हमला किया था। पॉल हैमैन ने भी उन्हें धोखा दिया था। उस एपिसोड में सैथ रॉलिंस और ब्रेकर के उन पर हमला किया था। पॉल हैमैन ने भी रंस को धोखा दिया था। इस घटना के बाद से ही रोमन के फैस उनका वापसी का इंतजार कर रहे हैं।

समरस्लैम में नहीं होगी वापसी - डब्ल्यूडब्ल्यूई के दूरनी सूत्रों की मानें तो रोमन रेंस जल्द ही वापसी कर दस्तावेजों में है। इससे पता चलता है कि डब्ल्यूडब्ल्यूई रोमन रेंस समरस्लैम में वापसी नहीं करेगा।

डीपीएल की नीलामी से पहले पुरानी दिल्ली 6 ने उठाया बड़ा कदम, ऋषभ पंत को किया रिटेन

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली प्रीमियर लीग के 2024 संस्करण के सेमीफाइनल स्टाइल पुरानी दिल्ली ने आधिकारिक तौर पर स्टाइल विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत को आगामी सीजन के लिए रिटन करन की घोषणा की है। पंत को मार्की खिलाड़ी के रूप में रिटन किया गया है। पुरानी दिल्ली 6 नें डीपीएल 2024 में अच्छा प्रदर्शन किया, पूरे लीग चरण में 10 प्रदर्शन किया। हालांकि दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में उनका स्कोर छोटा हो गया क्योंकि सेमीफाइनल में मुकाबला बारिश के कारण रद्द कर दिया गया।

पंत के टीम में बने रहने से उम्मीद है कि टीम 2025 सीजन में और अधिक प्रतिस्पर्धी इकाई बनाएगी। पंत के बारे में बात करते हुए पुरानी दिल्ली 6 के मालिक आकाश नांगिया ने कहा, "ऋषभ पंत न केवल विश्व स्तरीय क्रिकेटर हैं, बल्कि पुरानी दिल्ली 6 की धड़कन भी हैं। उनका नेतृत्व, अनुभव और प्रतिभा हमें बहुत दिलाती हैं। हम उनके ईद-गिर्द



एक मजबूत टीम बना रहे हैं और हमें इस साल जीत का पूरा भरोसा है।

अपना खुशी जाहिर करते हुए पंत ने कहा, 'डीपीएल युवा प्रतिभाओं को अपना हुनर दिखाने के लिए एक बेहतरीन मंच प्रदान करता है और इस लीग को सफलतापूर्वक आयोजित करने का श्रेय रोहन जेटली और डीडीसीए को

जाता है। डीपीएल द्वारा प्रदान किए गए अवसरों के माध्यम से देश भर के कई खिलाड़ी उभरे और विकसित हुए हैं, जैसे कि दिवेश राठी, प्रभाश आर्य और अन्य। उन्होंने कहा, 'पुनर्नी दिल्ली 6 वासव' में घर जैसा लगता है, दिल्ली के प्रशंसकों की जीवंत ऊर्जा और जीतने की बेजोड़ भूख से भरपूर। पिछले साल एक आशाजनक सीजन के बाद, सफल होने का हमारा दृढ़ संकल्प और भी बढ़ गया है और हम इस साल और भी मजबूती से वापसी करने के लिए आशावादी हैं।

महिला एशियाई कप क्वालीफायर

भारत ने इराक को 5-0 से हराया

चियांग माइ, एजेंसी। भारतीय महिला फुटबॉल टीम ने एएफसी महिला एशियाई कप 2026 क्वालीफायर में शानदार प्रदर्शन करते हुए इराक पर जीत दर्ज की। बुधवार को चियांग माइ स्टेडियम की



700वीं वर्षगांठ पर भारत ने इराक को 5-0 से हराया।

पहले हाफ में संगीता बासफोर और मनीषा ने भारत की स्थिति मजबूत कर दी। वहीं, दूसरे हाफ में कार्तिका अंगमुथु, फंजौबाम निर्मला देवी और नोंगमाईथेम रतनबाला देवी ने गोल करके टीम को बढ़त दिलाई। भारत ने अब तक तीन मैचों में 22

गोल दागे हैं, जबकि एक भी गोल भारतीय टीम के खिलाफ नहीं हुआ है। भारतीय टीम तीनों मैच जीती है। भारतीय टीम ग्रुप बी में 9 अंक के साथ शीर्ष पर है। वहीं, थाईलैंड दूसरे स्थान पर है। 5 जुलाई को भारत-थाईलैंड के बीच मैच होगा। मंगोलिया (13-0) और तिमोर-लेस्ते (4-0) के खिलाफ जीत दर्ज करने के बाद इराक के खिलाफ पूरे आत्मविश्वास के साथ उतरी भारतीय टीम ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया।

टीम ने इराकी डिफेंस को भेदने के लिए शाहदादर ड्रिलिंग का इस्तेमाल किया। वहीं, मिडफील्डर्स ने पॉसिंग और त्वरित बदलावों के साथ गति को नियंत्रित किया। ब्रेक के समय 2-0 से पीछे चल रहे इराक ने एक बदलाव किया और अलजेनोबी की जगह फैजा महमूद को मैदान में उतारा। लेकिन भारत की बढ़त बरकरार रही।

दूसरे हाफ में बमशुक्ल तीन मिनट ही हुए थे कि कार्तिका अंगमुथु ने 25 गज की दूरी से एक शानदार शॉट लगाया, जो गोल में बदल गया। भारत की तरफ से चौथा गोल 68वें मिनट में निर्मला देवी ने किया। जबकि, 5वां गोल 80वें मिनट में रतनबाला देवी ने किया।

रोनाल्डो के साथी खिलाड़ी की मौत, 2 हफ्ते पहले बचपन की प्रेमिका से रचाई थी शादी

नई दिल्ली, एंजेसी। लिवरपूल के स्टार डिओगो जोता की 28 साल की उम्र में गुरुवार (3 जून) को नॉर्थ सैफेल्ड में सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। उनकी लेम्बोर्गिनी के सड़क से फिसलने से हादसा हुआ। उन्होंने अपनी बचपन की प्रेमिका से दो हफ्ते पहले ही शादी की थी। कार में पुर्तगाल के फॉरवर्ड के साथी फुटबॉलर और भाई आंद्रे सिल्वा भी थे। 26 वर्षीय आंद्रे की भी दुर्घटना में मौत हो गई। जोता पुर्तगाली राष्ट्रीय टीम के लिए भी खेले हैं। वह 2019 और 2025 में क्रिस्टियानो रोनाल्डो की अगुआई में यूईएफए नेशंस लीग जीतने वाली पुर्तगाली टीम का हिस्सा भी रहे। वहीं, सिल्वा निचले डिवीजन में पुर्तगाली क्लब पेनाफेल के लिए खेले हैं। रिपोर्ट के अनुसार माना जा रहा है कि वलाडोलिड से 70 मील प्रतिघंटा में ए-52 पर ओवरटेक करते समय लेम्बोर्गिनी का टायर फट गया।



मीनाक्षी और पूजा रानी ने भारत के लिए पदक सुनिश्चित

अस्ताना, एजेंसी। भारतीय मुक्केबाजी दल ने कजाकिस्तान की राजधानी अस्ताना में चल रही विश्व मुक्केबाजी कप में दो पदक सुनिश्चित कर दिया है। मीनाक्षी (48 किग्रा) और पूजा रानी (80 किग्रा) ने देश के लिए पदक सुनिश्चित किया है।

मोनाक्षी ने कार्टर फाइनल में चीनी ताइपे की गुओ यी-जुआन के खिलाफ शानदार और प्रभावशाली जीत दर्ज की। भारतीय मुक्केबाज ने अपने तीखे फुटवर्क, सटीक मुक्के और रिंग में अपनी शानदार जागरूकता दिखाते हुए 5-0 के साथ सर्वसम्मत जीत हासिल की। मुकाबले की गति को नियंत्रित करने तथा दूरी से स्पष्ट रूप से अंक प्राप्त करने की उनकी क्षमता ने निर्णायकों को किसी भी प्रकार के संदेह से मुक्त रखा। उन्होंने सेमीफाइनल में अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया और इससे साथ ही अपने लिए कम से कम कांस्य पदक सुनिश्चित कर लिया। भारत की सबसे अनुभवी मुक्केबाजों में से एक पूजा रानी ने 80 किग्रा वर्ग

मेरे स्थानीय गुलसाया येरजान के खिलाफ दमदार प्रदर्शन किया। क्रॉटर फाइनल जैसे कड़े और अहम मुकाबले में पूजा ने आक्रामकता और नियंत्रण

स्वर्ण में बदलने की कोशिश करेगी। इससे पहले, अनामिका (51 किग्रा) ने क्रॉटर फाइनल में पहुंची। उन्होंने तुर्की की आयसेन तस्किन को



का मिश्रण करते हुए 4-1 के विभाजित निर्णय के जरिए जीत हासिल की। इस मुकाबले में पूजा ने शुरुआती दौर में देबाव झेला, लेकिन बाद के चरणों में निर्णायक पंच जड़े। आखिरी समय में उनके जोरदार पंच ही उनकी जीत का कारण बने। इस जीत के साथ, उन्होंने पोडियम फिनिश हासिल किया और अब वह सेमीफाइनल में पहुंचकर इसे हराया, जिससे इस भार वर्ग में भारतीय की उम्मीदें जीवित हैं।

पुरुषों की ओर से जदुमणि सिंह ने फिलीपींस के जे. ब्रायन बारिकुआओ के खिलाफ एक करीबी मुकाबले में बहादुरी से मुकाबला किया। जोशीले प्रयास के बावजूद जदुमणि बहुत कम अंतर से हार गए और कड़े मुकाबले के बाद टूर्नामेंट से बाहर हो गए।

13 छक्के अश्विन ने 48 गेंदों पर मचाया

नई दिल्ली, एजेसी। वाह भाई वाह. म
अश्विन. निभा दी टीएनपीएल 2025 में अप
डिंडीगुल के लिए सबसे बड़ी भूमिका. ये हुई ना

**सबसे बड़ी पारी खेलकर टीम को
टीएनपीएल के क्वालिफायर 2 में पहुंचाया**

वाली बात. कहते हैं जब मंच बड़ा होता है, तभी परफॉर्मन्स देने का भी मजा होता है. अश्विन ने भी उसी बड़े मंच का फायदा उठाया है. टीएनपीएल 2025 के एलिमिनेटर मैच जैसे बड़े मौके पर कप्तान होने के नाते उन्होंने अपनी टीम को वाकई फ्रंट से लीड किया है. जब पहले उन्होंने ऐसे गेंद से किया तो हैरानी नहीं हुई क्योंकि

उसके तो वो मास्टर हैं ही. लेकिन जो बल्ले से उन्होंने तूफान मचाया, उस देखकर भइया सचमें मजा आ गया.

बल्ले से पहले अश्विन ने गेंद से बरपाया कहर - अश्विन ने टीएनपीएल 2025 में अपनी सबसे बड़ी पारी खेली है. वो भी सिर्फ 48 गेंदों का सामना करते हुए. हालांकि, इस पारी की बात करें उससे पहले जरा अश्विन के गेंद से मचाए गदर के बारे में जान लीजिए.

टीएनपीएल 2025 में 2 जुलाई को डिंडीगुल और चोलाज के बीच एलिमिनेटर मैच खेला गया. इस मैच में ट्विंची ग्रेंड चोलाज ने पहले बैटिंग की. मगर वो 20 ओवर में 150 नरु का आंकड़ा भी पार नहीं कर सके. ऐसा इमर्लिए क्योकि अश्विन की कमान में डिंडीगुल के गेंदाबजो ने उन पर नकेल कसे रखी. चोलाज ने 20 ओवर में 9 विकेट पर सिर्फ 140 नरु बनाए. इन 9 विकेटों में 3 विकेट अश्विन कसान अश्विन के इरु

उन्होंने 4 ओवर में 28 रन देते हुए ये 3 विकेट लिए और मैच में अपनी टीम के सबसे सफल गेंदबाज रहे। टीएनपीएल 2025 में अश्विन का ये दूसरा बेस्ट बॉलिंग फीगर है। इससे पहले वो 22 रन देकर भी 3 विकेट ले चुके हैं।

13 छक्के बल्ले से 48 गेंदों में मचाया तूफान
- अब मैच बड़ा था। मामला एलिमिनेट होने या फिर फाइनल की ओर कदम बढ़ाने से जुड़ा था। तो ऐसे में बल्ला अश्विन सिर्फ गेंद से कहकर बचकर कहां मानसे वाला थे. ऐसे में जब 141 रन का लक्ष्य मिला तो उसने चेज करने के दौरान अश्विन ने अपने बल्ले का जौहर भी खूब दिखाया. अश्विन ने डंडीगुल के लिए पारी की शुरुआत की और सिर्फ 48 गेंदों में ही इन्हें रन टोक दिए। ये इनिंग टीएनपीएल 2025 में उनकी सबसे बड़ी पारी की वजह बन गईं.



